

1

1



२  
 भूतः सुप्रियैवजभैरुभट्टनिगङ्गु ॥ यद्  
 वादेवकनत्र ॥ ७ ॥ यद्विद्वि ० यद्विद्व ० ॥  
 मिमुमैमवये ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥  
 ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥  
 ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥  
 ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥  
 ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥  
 १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥  
 १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ ११४ ॥  
 ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥ १२१ ॥  
 १२२ ॥ १२३ ॥ १२४ ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ १२८ ॥  
 १२९ ॥ १३० ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ १३३ ॥ १३४ ॥ १३५ ॥  
 १३६ ॥ १३७ ॥ १३८ ॥ १३९ ॥ १४० ॥ १४१ ॥ १४२ ॥  
 १४३ ॥ १४४ ॥ १४५ ॥ १४६ ॥ १४७ ॥ १४८ ॥ १४९ ॥  
 १५० ॥ १५१ ॥ १५२ ॥ १५३ ॥ १५४ ॥ १५५ ॥ १५६ ॥  
 १५७ ॥ १५८ ॥ १५९ ॥ १६० ॥ १६१ ॥ १६२ ॥ १६३ ॥  
 १६४ ॥ १६५ ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १६८ ॥ १६९ ॥ १७० ॥  
 १७१ ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ १७४ ॥ १७५ ॥ १७६ ॥ १७७ ॥  
 १७८ ॥ १७९ ॥ १८० ॥ १८१ ॥ १८२ ॥ १८३ ॥ १८४ ॥  
 १८५ ॥ १८६ ॥ १८७ ॥ १८८ ॥ १८९ ॥ १९० ॥ १९१ ॥  
 १९२ ॥ १९३ ॥ १९४ ॥ १९५ ॥ १९६ ॥ १९७ ॥ १९८ ॥  
 १९९ ॥ २०० ॥



CC-0. Courtesy Sanjay Raina, Jammu. Digitized by eGangotri



३३



कलमप्रदानं गुरुमन्त्रलः। समिद्धः। ए  
 पदकृत्। मरेमाः। मुचमदंकरिष्टं कुरु ॥  
 एवं धर्ममं गलपतः। उटकि भवं गलपत  
 ये उटकिः। वंप्रणयमि गलपति मुपि।  
 उटकि मुवदकि ॥ ५॥ उः कलम मुवदना  
 ठगवद्वि। रयमं उमेवेवी ललम।  
 पदकृत् मुपि ॥ ५॥ उमेवेवी ललम।  
 पदका नवहं मुपेयदधुमं ॥ नमे मुपिष्टय  
 उटकि नमेवेवी ॥ उः उटकिः पयं ॥ ५॥  
 तिउपिष्टय। पदकि मुपिष्टय। उटकि मु  
 मेपिष्टय ॥ ५॥ उटकिः पयं ॥ ५॥  
 मु. व. मु. विष्टय ॥ ५॥ उटकिः पयं ॥ ५॥  
 मातिष्टयः। उटकिः ॥ मुचमदं गलपत  
 ये ठगवद्वि। उटकिः पदकृत्। मु  
 उटकिष्टयः। उटकिः ॥ एवं उटकिः ॥  
 मुचमदं ॥ मुचमदं मुचमदं ॥ निष्टय  
 मुचमदं मुचमदं मुचमदं मुचमदं ॥  
 मुचमदं मुचमदं मुचमदं मुचमदं ॥  
 मुचमदं मुचमदं मुचमदं मुचमदं ॥  
 मुचमदं मुचमदं मुचमदं मुचमदं ॥  
 मुचमदं मुचमदं मुचमदं मुचमदं ॥  
 मुचमदं मुचमदं मुचमदं मुचमदं ॥



6

लखवधुपदवधुवधुवधुभि भभगधुपुउभन  
 पविउरुयभपउभभ सभउभभयउ ॥ पु  
 न्नेवः ॥ चकुउमगिउवउः चपयवेमुन  
 लयऽमभं ॥ पुहठगउ ॥ उउकुसप्रलनं  
 समप्रलं ॥ धुहठ वउलं नीलं अं ॥ पउलि  
 पुकुभिमेमं उधुमुमनं उधुपगि कुचं विहउधं  
 भंभुध प्रलयेउ ॥ भंयभः ॥ चधुनेः ॥ गय  
 हेनमः ॥ उधुहठगउ अदधु चपेः वभभु भेभभु  
 मुमभवभं ॥ चपेः प्रलपः भेभभु भेभभु ।  
 मुगिउधु वदभः भेभभु ठगवउधु अद  
 धुः भविउः वधुः प्रधुः लखपुः वयेवभन  
 धुभिउधु वधुधु वेमुवधु वभवधु विभेः  
 वधु उवगधु मुधिनधु वधुः कुचमविभ  
 वउधुनं मुधेनं चकुउमगिनिभिउं कुचमप्र  
 चं ॥ लंभधुभनं ॥ अदय वं प्रलं अद ।  
 पुवदधिधुभि ॥ मवेदेवी लखधु । अदयऽ  
 टदि पं ॥ मवेदेवी ॥ अदऽटदि ऽंवेमुधु  
 गवधुधुधु ॥ लंभधु नवेधुं भिधुव  
 धु भविउलि अदयऽटदि मुधेनं धिधुव  
 मवेभेपधुनिवधु ॥ चकुउमः कुचमप्र  
 लं नभेनवेधुनमः ॥ उउकुसप्रलं भभधुव



वग सुप्रेमि नमो ब्रह्म ॥ १ ॥ तिर्यग्यणु  
 भुजं पदमष्टलमनीय ॥ धनुषि धनुषि  
 धुं कदं जिनमदले नृगधण निभुद्रिनि ॥  
 सं भवभए ० मंष्टवः ५ या लधणयः ३ मंडवे  
 सुभुगभनि ५ रथवरीः ५ लधणीरिडि। सुभु  
 जवेभवं लज्जवज्ञेन सुनेन कुचधुगकुलैम  
 ॥ भं ॥ ५३ः प्रोणः कुचं रदीव ॥ यलमन  
 मिधुग रिकं वरं, मानभयसि कुचनभज्ज ५  
 कदं ॥ भः ॥ ३ मनभः कष्टधं निरुडिनि  
 र दिधुक्रमः रेक विनियोगः ॥ सि सुधम  
 मंड निरुडि रिकधु सुधिकिंयन सुगं रधुं प  
 धनं भवं रधपदमदं ० ५ हग रिकधु चं मंष्ट  
 नममने ॥ सुधधुने रिकधु मंष्ट रिकमंड  
 ये सुधधुमे भिनः पम मंष्ट रिकमंड भवे ५ ५ ह  
 रिकधु मंष्ट ॥ यं उधमनक मंड भवे भुयक  
 नवे उं भुयलधु भयय भवनवयलभक ५  
 ५ हग रिकधु चं मंष्ट लवीभदं ५ हनेन रिक  
 धुचधुग भः ॥ लवीभदं निरुडि रिकमनः पिउव  
 पदधुयवेमिदि यलधमनधु लयभनधु मिदि  
 वी रिकधु विविमष्ट ० ५ विमधुचधुग ॥ सुपेयं  
 चरगोड उगधु कुचनभं रिक कदं ॥ ० ॥ भनः न



नृदंमभिः ॥ मित्रगोप्रच  
 नृ॥ मंत्रेण ॥ कंदं १ पुनः  
 लप्यमानवपत्निममिगुग  
 उडग्ये ॥ कुचंमष्टय ३  
 नेकयुके ॥ उडगमिगुग  
 प्रचं २ कुचंमष्टय ॥ ५ ॥

पुत्र







CC-0. Courtesy Sanjay Raina, Jammu. Digitized by eGangotri



CC-0. Courtesy Sanjay Raina, Jammu. Digitized by eGangotri



12

सभी वद  
वसुधै कुरुते

[illegible]

वर्ग  
पद

7.







[illegible]



CC-0. Courtesy Sanjay Raina, Jammu. Digitized by eGangotri



16

ॐ नमः शिवायः कर्मभक्त्या सुखितुं कुरुते किंचित् प्रयत्नेन  
 एतत् विधीयते नदीया तिमिरिणो वा ध्वजदेवता मिला  
 वाधुवते परशुभिभाकर्मयन गगनस्य यत्तु मदे निद्र  
 उच्चैव एतत् चतुर्भुजं भद्रं पुरं विष्णुं भद्रं दण्डकं ग  
 दगदं भद्रं सति प्रसन्नं प्रणतं उवा सन्तु मृग  
 पंनिष्ठं चतुर्भुजं मकरयेता लक्ष्मिदेवं केटिदेवं म  
 कदेवं मकरयेता नेत्रुक्षिप्तं वभूति तिलमन्त्रमुक्ता  
 वक्तुं पायसं मीथुनं मन्त्रं यं भवति लक्षणम् । एवं ह्य  
 परं मा त्रिंतिष्ठति लिख्यते । उन्निर्गन्धं भवेत्तु मय  
 दण्डं लिख्यति ॥ ५॥

उन्निर्गन्धं भवेत्तु मयः मीनभं भक्तिं प्रयासितं नैवेद्यं निवेद्य ॥ यम  
 वैष्णवीमात्रिभुजं पातु पञ्च नैवेद्यं ॥ यमवैष्णवीमात्रिभुजं  
 मेरुमकुयं देवकामिह वदकामिहः ॥  
 पुनर्मन्त्रं गुरुहृत्तु भुजं पञ्च भवम पातु मपायमं मेमनेदि  
 उवाचकं उवा मपिठं जं वपे महुः क्रीगठं जं वरुभये पातु  
 भिमूलिमात्रं विठं नवभुजं पयता तिलभुजं यत्तु म  
 धभिन्मभं पातु मन्त्रः मंभमन्त्रं मंदि केये प्रमन्त्रं तलिक  
 मूलि लक्ष्मि प्रपकं ठुत्तु म्भुजं म्भुजं म्भुजं म्भुजं म्भुजं  
 मिदुठुत्तु लिख्यते उवेत्तु प्रमपयेता नृवरुनि विण नउत्तु  
 रं म्भुवभद्रं गुरुना भुजं पट्टमन्त्रं म्भुजं पट्टमन्त्रं म्भुजं  
 भक्त्या गता ॥



देवदत्तं नि॥ वीरदेवीगमनहरीयेवीगमः ॥  
 मुपेक्षकील एकनैभुसेवग मित्रभक्तदत्तनेनवभ  
 एकपदक कलु वीरभक्तगुणकाममधुप्रलयग  
 येनमष्टिद्विक्तमुपेक्षेवदत्तं वलिप्रः भक्तदेवदेवः  
 जीभगदनिगयेवभेडा ॥ २ ॥

गिरधरनि॥ सुप्रभुदिक चक्षुमुनग गलभुनग  
 कल्कीकग हयग नेकुलगा भद्रभगा गृध्रभक्तिक  
 लवेवभपुमदिक ॥ ममीपहानि दभदिले ययदु  
 किले मलिदिले यव वीदि केरुव नेप्रभ भवे  
 धपीः ॥ अष्टण्डवः ॥ भुवले गगनं गभं दगि  
 लं मनस्विला नैगिकं चक्षुनं लंभं लेदप्रलं  
 मभक्तं गवुकं मरुं लउण्डवः ॥ भ  
 धपलनि भद्रपली ममी वय लउण्डुगी दु  
 लल भमी चक्षुं मुउभदय ॥ भपुवीदि॥  
 युवनेप्रभनीवग मभमद्विषयद्वः लउण्डभपुमं  
 देवभपुवीदिः मभद्वः ॥ भुवले गगनं गभं दगि  
 लं मनस्विला मरुं गवुकं देव भपुउण्डवः भः ॥  
 नल्लभपी कुं दिमी हपी कुमनिक विद्वन्त  
 भद्वेवी चक्षु मरुं हरेण लउण्डु प्रव



तिम्रवपलपनयविधिः॥  
 दशउयं १२ महुलपतिभम्  
 गङ्गागु  
 दगनुल ३१  
 लभते  
 ययपिभुं ३ भिग  
 कभलं  
 भय ३ भल  
 वगुदं १  
 पुउलए  
 भजुल १  
 भागमभ  
 जकुभं  
 गवदल १  
 गलभं  
 कदु  
 मगकनं  
 पदुभं  
 कुलभं  
 दया  
 भनःमिल  
 भइलि ३०॥

दशउयं १  
 पनमं  
 पिउलं  
 डिलककुं  
 भवेधनी  
 नरेयना  
 भिउग  
 भेदग  
 नरिउलं १, मीदलं  
 दठेला  
 पगुगुं  
 कगलीदला  
 ठेभा  
 मभगवले  
 यलेपवीडि  
 दगला  
 ठभा  
 दलपककं  
 भेना  
 कदमं १, पलीवहं  
 भनपल



कमले चक्रोऽं ॥३॥ चक्रं प्रधानं दीपं भूगुरुं  
लालं चक्रं कमले उपपिपकं धिं पञ्चगह  
लयं नमः भूगुरुं दृष्ट्वा धिं भिन्नं नमी  
वना ॥३॥ धिं कदाचित् भवसं भवपं ॥  
॥३॥ नमी कमले चक्रं ॥३॥ धिं पञ्चगह  
मीकम उदगं यथा विधिः ॥



[illegible]

परात्ति ३०॥ धर्मयेः १०॥ लक्षयेः ५॥ द्वैः २॥  
वधयेः ३॥ चक्रैः ५॥ कार्यैः १०॥ मंगल ००॥  
कष्ट २॥ मित्र मि ३१॥

मिभिर्गङ्गीलं द॥ श्रीकलं॥ भंभी श्रीव्यां॥ ५  
नविश्वं हृदये सुवलं॥ मन्मन्निधु शिलकलं॥  
सुमेधगपम॥ लिङ्ग दण्डिलं गङ्गा भवः मिलाय॥  
वधयेः वक्तुं॥ ७॥ द॥ चक्रं॥ ७॥ मन्मन्निधु॥  
कुलकुलिः भुक्तं॥ द॥ वेधुयं॥ ययपिभुन



पान्नी

गङ्गा







[illegible]



A line drawing of a figure with multiple arms, some holding objects, and red markings on the body. The figure has a large head with a crown-like structure and a serene expression. The body is adorned with red markings, possibly representing wounds or decorative patterns. The figure's arms are extended in various directions, with some holding objects. The drawing is simple and appears to be a sketch or a preliminary drawing.



CC-0. Courtesy Sanjay Raina, Jammu. Digitized by eGangotri



